Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मध्यकालीन संत-भक्तों के काव्य में सांगीतिक तत्व: एक विवेचनात्मक अध्ययन

AMANNEET KAUR[1] & DR. RISHPAL SINGH VIRK[2]

[1] Research Scholar, Dept. of Performing and Fine Arts, Central University of Punjab, Bathinda
[2] Assistant Professor, Dept. of Performing and Fine Arts, Central University of Punjab, Bathinda

सार

भारतीय संस्कृति का मूल अध्यातम है। आरम्भ से ही संगीत कला धर्म की गोद में पली व पोषित हुई है। प्राचीन समय से ही संत-भक्तों ने अपने गीति पदों को संगीत में निम्म्जित करके रचा और गायन किया। माना जाता है कि भारतीय संगीत की उत्पत्ति ही देव मंदिर के प्रांगन में वेदों की ऋचाओं के साथ हुई। वेद मन्त्रों से शुरु हुयी इस संगीत परम्परा का जन मानस पर उलेखनीय प्रभाव पड़ा, प्राचीन काल उपरान्त मध्याकाल में भी संत-भक्तों ने अपने अध्यात्मिक काव्य की रचना की और उसको लोगों तक पहुँचाने के लिए संगीत कला को माध्यम बनाया। मध्यकालीन संत-भक्तों के काव्य में अनेक संगीत तत्व स्पष्ट रूप में देखने को मिलते हैं जिनका वर्णन इस शोध पत्र में करने का प्रयास किया गया है।

विशेष शब्द : काव्य, संगीत तत्व, संत-भक्त, परंपरा, निर्गुण भक्ति, सगुण भक्ति |

भारतीय परम्परा में संगीत और भक्ति समान्तर एवं पूरक रूप में प्रवाहमान रही है| भारतीय संगीत की उत्पति ही देव मंदिर की प्रांगन में वेदों की ऋचाओं के साथ हुई| आरम्भ से ही संगीत धर्म की गोद में पला व पोषित हुआ है| प्राचीन समय से ही भक्त कवियों और संतों ने अपने गीति पदों को संगीत में निम्म्जित करके रचा और गायन किया| भक्ति काल का समय संवत 1350 से 1700 के लगभग माना गया है| इसके संबंध में रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि हिंदी साहित्य में काल विभाजन के अंतर्गत पूर्व मध्यकाल-भक्तिकाल संवत 1350 से 1700 विक्रमी माना गया है| भक्तिकाल में निर्गुण भक्ति धारा और सगुण भक्ति धारा नामक दो धाराएं प्रचार में रही| निर्गुणधारा के अंतर्गत ज्ञानमार्गी शाखा एवं प्रेममार्गी शाखा और सगुणधारा के अंतर्गत रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति शाखा प्रचार में थी| सगुण भक्ति धारा में सूरदास, तुलसी और मीरा आदि भक्ति कवियों ने प्रभु उपासना के लिए पदों की रचना की| निर्गुण भक्ति धारा के कवियों संतों ने अपनी भावना को गीतात्मक पद रचनायों में रूपायित किया| निर्गुण भक्ति धारा के अंतर्गत संत कबीर, गुरु नानक देव, बाबू दयाल, मलूकदास, और सुन्दरदास आदि संत कवि आते हैं और प्रेममार्गी शाखा के अंतर्गत जायसी आदि कवि आते हैं, इस प्रकार यह एक सामान्य तथ्य है कि परम्परागत प्राचीन निर्गुण भक्ति धारा और सगुण भक्ति धारा भक्ति के संत कवियों ने अपनी जो पद रचनाएं की हैं उनमें संगीत तत्व भी समाहित रहे हैं| उनकी रचनायों का गायनबद्ध होना ही उन्हें संगीत तत्व में संयुक्त कर देता है|

भक्ति शब्द भज धातु से कितन प्रत्यय लगाने से बना है| भज धातु के अनेक अर्थ हैं जैसे सेवा, विभाग, अनुराग और विशेष आदि| इसी प्रकार भक्ति के अनेक अर्थ हैं जैसे आराधना, सेवा, विश्वास, उपचार, आश्रय लेना और ध्यान करना| इसी प्रकार कहा जा सकता है कि भक्ति किसी साधक के अपने आराध्य देव के प्रति निरंतर पूज्यभाव और प्रेम रखने का ही नाम है| प्रेम और भक्ति का यह सम्बन्ध वैदिक युग से चला आ रहा है| भारतीय संगीत के विकासशील सफ़र में धर्म का बहुत ही महत्वपुर्ण स्थान रहा है| धर्म शब्द में धारण और मन दोनों का समावेश है| मन के द्वारा धारण करने के नियम धर्म की कोटि में आते हैं| ज्ञानपुर्वक मन द्वारा धारण करने वाले नियमों की जो रूपरेखा या नियमावली गठित होती है उसे धर्म कहा जाता है| प्रभु दयाल मितल लिखते हैं:

"धारणात धर्मामिथाहू : धर्मों धारयती प्रजा"[1]

धर्म के संबंध में भाई काहन सिंह नाभा 'गुरमुख मारतंड' में लिखते हैं कि धारण योग कर्तव्य जिसके बिना मनुष्य पूर्ण नहीं हो सकता अर्थात इर्षा द्वेष रहित होकर मनुष्य को एक ही पिता की संतान मानकर सभी का भला सोचना,आत्मिक और शारीरक उन्नति करना,परुप्कारी और सदाचारी होना हमारा समान्य धर्म है| धर्म के संबध में श्री गुरु अर्जन देव जी लिखते हैं कि:

"सरब धरम महि स्रेसट धरम|| हर को नाम जप निरमल करम ||"[2]

(अर्थात सभी धर्मों में श्रेष्ठ धर्म वही है जिसमें हरि के नाम का सिमरन मुख्य रूप में प्रवाहित होता है)

इसी प्रकार वेद वेदांगों में धर्म शब्द के अनेक समानार्थक शब्द प्रकट होते हैं|अथर्ववेद में धर्म शब्द का प्रयोग क्रिया संस्कार करनी के अर्जित गुण और 'एतरेस 'ब्राह्मण' में धर्म शब्द धार्मिक कर्तव्यों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है| इस प्रकार धर्म शब्द का अर्थ कालांतर में परवर्तित होता रहा है| वेदों और उपनिषदों में धर्म को विभिन्न नामों से पुकारा गया है| वेद शास्त्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ईश्वर ने सर्वप्रथम माया की रचना की, बाद में ब्रह्मा की उत्पति हुई, ब्रह्मा ने सारी कायनात की रचना की भाव सर्वप्रथम मनुष्य की उत्पति हुई इसके बाद धर्म बना|

उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति का मुख्य स्रोत अध्य्यात्मक है| भारतीय लोगों ने इसी अध्यात्मिकता को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में स्वीकार किया है| इसी लिए भारतीय संस्कृति और धर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है| धर्म अर्थ और काम के बाद मोक्ष की प्राप्ति ही भारतीय संस्कृति का अंतिम लक्ष्य है|

मध्यकाल में धर्म की विकासशील यात्रा

धर्म के विवेचनात्मक अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि मध्यकाल का समय एक भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखता है, यह समय धार्मिक आन्दोलन से प्रसिद्ध है जिसे हम भक्ति आन्दोलन का नाम देते हैं | इस काल में राजनीति अस्थिरता, समाजिक अव्वस्था और धार्मिक आडम्बर होने के कारण समाज में कई कुरीतियाँ प्रवेश कर चुकी थीं और शक्तिशाली सम्राटों का बोलबाला था| मुस्लिम शासकों ने प्रजा पर अत्याचार करने आरंभ कर दिए थे और मध्यकालीन समाज में अनेक मतों अनुष्ठानों, उपासना पद्तियों और चमत्कारित व्याख्यान प्रबल था| लोगों में चमत्कारिक, अशिक्षित और काल्पनिक महत्व उत्कर्ष पर था अर्थात समाज गुरु प्रधान था| रामकृष्ण, शंकर, गणेश, दुर्गा आदि की उपासना के लिए गुरु मन्त्र दिया करते थे| इस समय में सगुण और निर्गुण दोनों रूप प्रचार में थे| राजनीतिक, समाजिक और साहित्य जीवन का केंद्र बिंदु धर्म ही था| मध्यकाल का सम्पूर्ण साहित्य (संत साहित्य, सूफी साहित्य, राम और कृष्ण साहित्य) का आधार धर्म ही रहा| हिन्दू धर्म संसार के प्रमुख धर्मों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है| मध्यकाल में राजनीतिक, समाजिक परस्थितियों के कारण इसकी विकासशील यात्रा में खलन पड़ा परन्तु कुछ महान त्यागी और तपस्वी संत भक्तों ने इस धर्म के प्रचार के लिए उल्लेखनीय कार्य किये| इन संत भक्तों ने धार्मिक साहित्य को लोगों तक पहुंचाने के लिए संगीत को माध्यम बनाया इसी लहर का नाम भक्ति आन्दोलन पड़ा| उत्तरी भारत में इस भक्ति आन्दोलन में कीर्तन की परम्परा प्रचलित रही है जिसमें रामानंद, नामदेव, कबीर, मीराबाई, चेतन्यदेव महाप्रभु, गुरु नानक देव जी और दक्षिण भारत में शंकराचार्य, रामानुजचार्य आदि के नाम प्रमुख हैं जिन्होंने भक्ति आन्दोलन में लोगों का मार्गदर्शन किया| एस समय कीर्तन परम्परा के चार प्रकार (यात्रा कीर्तन, अष्टयाम कीर्तन, विषेय कीर्तन और भजन कीर्तन[3]) थे| कीर्तन में गाये जाने वाले सभी गीत संगीतमय होते थे| गीत उसे कहेंगे जो हृदय के उद्गार गीतों के बंध में बंधकर राग, ताल और लय से युक्त हों| इस में से किसी एक का अभाव 'गीत' की श्रेणी से नीचे गिराकर 'गीति' की श्रेणी में ले आता है| कीर्तन में गाये जाने वाले सभी गीत ईश्वर से ही सबंधित होते हैं,चाहे उनका वर्णन किसी भी रस या भाव में क्यों न हो| सभी संत भक्तों ने अपनी अपनी विचारिक दृष्टि से अपने काव्य को संगीत कला के साथ ओत-प्रोत करके अधियातम का सन्देश लोगों को दिया| कुछ संत भक्तों के काव्य में संगीतक तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन निम्नलिखित हैं:

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

भक्त कबीर (1398-1518) रचित काव्य में संगीत तत्वों का भरपूर वर्णन मिलता है| कबीर ने भक्ति एवं ज्ञान को एक नया रूप देकर जन जीवन को एक मंगलम्य दार्शनिक क्रान्ति का शुभाशुभ किया। कबीर की सधुक्कडी भाषा में जिस प्रकार सभी प्रान्तीय भाषाओं में कहीं अधिकता व कहीं न्यूनता है, उसी प्रकार उसमें भी स्वर व तालों की सपष्ट विभिन्नताएं विद्यमान हैं। कबीर जी ने संगीत भाव पक्ष को उत्कृष्ट बनाने में क्रान्किारी परिवर्तन ला दिया। एक सुप्रसिद्ध विद्वान ओसाली मिलडस्टन Internal light of Kabir में लिखते हैं कि: ''अकबर काल में सन्त कबीर ने संगीत के क्षेत्र का गर्दी-गुबार खत्म कर दिया था।[4] अर्थात अकबर काल में कबीर जी ने संगीत जो अश्लील गीत बनते जा रहे थे, उन सब का कबीर के पदों के सामने प्रभाव शून्य हो गया। डगमगाते हुए समाज को सुधिर करने में कबीर के पदों ने उलेखनीय कार्य किया। मुगल काल में अन्य संगीतज्ञों की तरह कबीर का स्थान भी उच्चा रहा है। कबीर जी के आदि ग्रन्थ साहिब में भक्त कबीर जी के 229 पद और 243 श्लोक 17 रागों (राग श्री, गौड़ी, आसा, गूजरी, सोरठ, धनासरी, तिलंग, सूही, बिलावल, गौंड, रामकली, मारू, केदार, भैरो, बसंत, प्रभाती और सारंग) में वर्णित हैं| रागों में रचित वाणी से स्पष्ट होता है कि भक्त कबीर उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे| आदि ग्रन्थ साहिब में भक्त कबीर जी की वनकी सब भक्तों से अधिक है|

मध्यकाल में अध्यात्मक संगीत के क्षेत्र में सिख गुरु साहिबान का योगदान उलेखनीय रहा है| गुरमत संगीत परंपरा में प्रत्येक शबद के शीर्षक में गुरु साहिबान से भी पहले राग का नाम आना ही इस बात का प्रतीक है कि गुरमत संगीत में राग एक मूलक तत्व है।गुरबानी में 31 शुद्ध एवं 31 मिश्रित रागों का इस प्रकार समावेश मिलता है कि हर रस और रंग का राग समाविष्ट हो जाता है। संगीत के तत्वों, वाद्यों, गायन शैलियों, लोक ध्वनियों एवेम प्रसंग शैलियों के सन्दर्भ में गुरबानी में कलात्मक प्रयोग लिया गया है|

मध्यकाल में गुरु नानक देव जी (1469-1539) के समय ध्रुपद गायन प्रचार में था। गुरु नानक देव जी के आगमन से सिख धर्म की शूरुआत हुई और कीर्तन प्रथा प्रचार में आई। स्वर ताल के माध्यम से भक्ति करना मध्यकाल की यह अनोखी प्रथा थी। गुरु नानक देव जी ने संगीत को परमेश्वर की आराधना का सर्वोतम साधन माना। आप ने गुरु वाणी को लोगों तक पहुँचाने के लिए संगीत कला का प्रयोग किया। गुर जी स्वंय महान संगीतज्ञ थे जिन्होंने 26 रागों में 976 शब्दों की रचना की। आप ने अपनी वानी में खुद को 'शायर' या 'ढाढ़ी' शब्द से संबोधित किया है। आप ने 26 रागों (धनासरी, सोरठ, तिलंग, रामकली, मारू, तुखारी, भैरो, गौड़ी दखणी, गौड़ी गुआरेरी, गौड़ी बैरागण, गौड़ी दीपकी, गौड़ी पूरबी दीपकी, आसा काफी, बिलावल दखणी, रामकली दखणी, प्रभाती बिभास, प्रभाती दखणी आदि) में वाणी की रचना करते हुए उन्हें शुद्ध, छायालग और संकीर्ण श्रेणियों में वर्गीकृत किया है जिससे यह ज्ञात होता है कि आपको संगीत कला का पूर्ण ज्ञान था। आप ने गुरुवाणी के प्रचार पासार के लिए 'रबाब' नामक वाद्य का भी प्रचलन किया। आप ने प्रथम कीर्तन केंद्र करतारपुर नगर में स्थापित किया जिसका प्रमाण आदि ग्रन्थ में मिलता है:

"करतार पुर करता वसै संतन कै पास।।"[5]

गुरु नानक देव जी ने कीर्तन करने के लिए अपने साथ भाई मरदाना को रखा जो रबाब वादन में परिपक्व थे जिन्हें बाद में 'भाई' की उपाधि से अलंकृत किया गया। भाई मरदाना प्रथम कीर्तनकार थे जिन्हें भाई की उपाधि से अलंकृत किया गया।

गुरु अमरदास जी (1479-1574)ने गायन और वादन संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करते हुए जहाँ राग धनासरी, गोंड, सोरठ, बिलावल, बसंत, रामकली, मारू, भैरो, तुखारी, केदारा, गौड़ी बैरागण आदि में वाणी की रचना की वहीँ 'सरंदा' नामक वाद्य का आविष्कार भी किया[

महाकवि सूरदास (1479-1584) ने इसी कारण कविता की शैलियों में गीत शैली को ही अपनाया| सूरदास ने अपने काव्य में मानव-हृदय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों का जो मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है व्यंग्य एवं उपालम्भए श्रृगार एवं वात्सल्य के साथ करुण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मर्मस्पर्शी हृदयग्राही विरह-वेदना की जो मार्मिक अभिव्यंजना की है वैसा कार्य कोई अन्य कवि नहीं कर सका है। उनकी साहित्यिक रचनाओं में सुललित पदों के निर्माण में विभिन्न रंगों का यथावत् उल्लेख विविध उपमा एवं उत्प्रेक्षओं की उपयुक्तता स्वाभाविकता और राग-रागिनियों में पद रचना करते हुए छन्दों के बड़ी ही चतुराई से किए प्रयोग को देखकर बडे-बड़े आचार्य और संगीतज्ञ उनकी प्रशंसा कर उठते हैं। उनके प्रत्येक पद में प्रत्येक छन्द की यति गति का सम्बन्ध उसमें प्राप्त लय विधान से होता है। सूरदास के काल में ध्रुवपद और ख्याल दोनों का प्रचार समान रूप से था|

ध्रुवपद यहाँ की प्राचीनतम शैली थी और खयान नवीनतम|[6] सूरदास भक्त गायक और कवि तीनों थे। बचपन से ही मधुर भाषी एवं सुरीले सूरदास ने आराध्यदेव को रिझाने उसकी लीला और छवि का गान करने के लिए साहित्य में काव्य और संगीत का सुमेल किया है क्योंकि संगीत में चंचल वृत्तियों को केन्द्रीभूत करने साध्य के साथ एकीकरण तथा आत्मा-परमात्मा का मिलन कराने भक्ति में तन्मयता लाने और परम शांति को प्रदान करने की असीम शक्ति है।[7] सूरदास के पदों में बिलावल, सारंग, धनाश्री, मारू, रामकली, आसावरी, केदार, मलार, गौरी, नट, सोरठ, जैतसरी आदि रागों का वर्णन किया है| इसके अतिरिक्त अनेक संगीतक वाद्य यंत्रों का वर्णन भी सुर सागर ग्रंथ में मिलता है|

मीरा बाई (1498-1546) एक भक्त होने के साथ-साथ संगीत साधक भी थी| उनकी भक्ति का माध्यम भजन कीर्तन था| मीरा बाई को जो अनुभव अपने हृदय से मिलता था, उसे मीरा बाई अपने काव्य में निबद्ध करके नृत्य या गायन के माध्यम से प्रकट करती थी| मीरा बाई ने काव्य शास्त्र का अभ्यास नही किया था, उनका ध्येय अलग ही था इसलिए उनके पद उच्च कोटि के बने| तुलसीदास, कबीर, सूरदास आदि इन सभी भक्तों ने भक्ति काव्य लिखा और वे सभी गायक थे| काव्य की दृष्टि से तुलसीदास सर्वश्रेष्ठ है| काव्य और भक्ति की दृष्टि से सूरदास सर्वश्रेष्ठ बनते हैं लेकिन संगीत साधना के दृष्टिकोण से मीरा बाई सबसे बड़ी साधक हुई| मीरा बाई के अनेक पदों में रागों के शीर्षक मिलते हैं जैसे मांड, आसा, गरबी, गुजरी, पहाड़ी, मारू, लावनी आदि|

भक्त तुलसीदास (1532-1623) का युग संगीत का स्वर्णकाल कहा जा सकता है|इसी समय उत्तरी भारतीय संगीत पद्धति का उन्मेष हुआ और अनेक शास्त्रीय संगीतज्ञों के यश से इस पद्धति का विकास और निकास हुआ भक्त तुलसीदास क पद साहित्य को सांगीतिक दृष्टि से दो तरह (राग योजना और ताल पद्धति) से देखा जा सकता है| संगीतज्ञ महाकवि तुलसीदास ने अनेक राग-रागिनियों की चर्चा अपने गीति ग्रंथों में की है जो आपकी सांगीतिक प्रतिभा का एहसास करवाती हैं| तुलसीदास खुद को अपने आराध्य देव के प्रति समर्पित कर देना चाहते हैं| तुलसीदास की भावानुकूल राग व्यंजना और ताल उक्त शब्द योजना से पता चलता है कि वे वह संगीतज्ञ थे जिन्होंने संगीत कला के माध्यम से आध्यात्म का प्रचार-प्रसार किया| भावों की अभिव्यक्ति क लिए रागों का यथाचित उपयोग किया गया है| आसावरी, सोरठ, विकाल, जैतश्री आदि राग तुलसीदास को बहुत प्रिय थे|भक्त तुलसीदास ने वीर और रौद्र के लिए मारू और करुण एवं श्रृंगारके लिए आसावरी राग का प्रयोग गीतावली के कई पदों में किया है|

गुरु रामदास जी (1534-1581) भी संगीत कला और काव्य कला में असधारण प्रतिभा के धनी थे। गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज सबसे अधिक बाणी गुरु रामदास जी की है। आप ने भी कीर्तन प्रथा को प्रचारित किया आप के समय में सत्ता और बलवंड नामक कीर्तनकार कीर्तन किया करते थे। आप ने धनासरी, सोरठ, तोड़ी, तिलंग, बैराड़ी, गोंड, जैतसरी, मारू, तुखारी,भैरो, बसंत, कानड़ा, कल्याण आदि अनेक रागों में गुरबानी की रचना की।

गुरु अर्जन देव जी (1563-1606) को गुरु अमरदास जी ने आप को बाल्यकाल में ही "दोहिथा, बाणी का बोहिथा" कहकर सम्मानित किया, जिसका अर्थ है कि उनके दोहते (गुरु अर्जन देव) वाणी के सागर हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गुरु रामदास जी के बाद गुरु अर्जन देव जी की वाणी आदि ग्रन्थ में सबसे अधिक दर्ज है। संगीत और रागों को तृष्णा आदि द्वैशों को हरने का सुन्दर साधन मानते हुए गुरु साहिब उचारण करते हैं:

"धंन सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाए।।"[8]

अर्थात् वो सुन्दर राग मुबारक हैं जिनको गाने से मन की तृष्णा का समाप्त हो। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि गुरु साहिब न सिर्फ मधुर संगीत की ओर संकेत कर रहे हैं बल्कि संगीत को साधन बनाकर हृदय की तृष्णा को शांत करने का उपदेश भी दे रहे हैं। गुरबानी में संगीतकार को 'रागी' का दर्जा दिया गया है, जिसका अर्थ है रागों का ज्ञाता। रागी की उपमा में गुरु साहिब उचारण करते है:

" भलो भलो रे कीरतनिया ।। राम रमा रामा गुन गाउ ।। छोडि माएआ के धंध सुआउ।।"[9]

आप ने धनासरी, आसावरी, बैराड़ी, जैतसरी, मारू, रामकली, तुखारी, भैरो, बसंत, कानड़ा, कल्याण आदि रागों में गुरबानी की रचना कर जन-साधारण तक भक्ति की धारा को प्रचारित किया।

गुरु हरगोबिन्द साहिब(1595-1644)भी एक महान संगीतज्ञ हुए राजनीतिक परस्थितियाँ अनूकूल ना होने के कारण आप गुरुवाणी की रचना तो नही कर पाए लेकिन आप ने कीर्तन प्रथा की ज्योति को निरतांत प्रज्वलित रखा। आप के समय में सिख धर्म में ढाढ़ी प्रथा का प्रचलन शुरु हुआ। ढाढ़ी प्रथा में कीर्तन रूप में योधायों में जोश भरने के लिए वार गायन का प्रचलन आपके समय में ही प्रचार में आया।

गुरु तेग बहादुर साहिब (1621-1675)ने कीर्तन की इसी प्रथा का प्रचार-प्रसार करते हुये गुरमत काव्य में रागदारी को कायम रखा। आप ने जैजावंती, प्रभाती, सोरठ आदि रागों में बाणी की रचना कर मनुष्य जाती को ग्रहस्त जीवन में रहते हुए भी संगीत और भक्ति के माध्यम से प्रभु में लीन होने का उपदेश दिया। आप के समय के प्रमुख कीर्तनकार भाई सददू और भाई मददु हुए। गुरु साहिब गंभीर स्वभाव के मालिक थे जो आप दुवारा रचित वाणी से भी झलकता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी (1666-1708) एक महान योधा होने के साथ साथ महान संगीतज्ञ भी थे। आपकी बानी का संकलन 'दशम ग्रन्थ' के रूप में हुआ है। आप संगीत और काव्य कला के प्रेमी थे। आप के दरबार में 52 कवि थे जो गुरमत सिद्धांतों के अनुरूप कवितायों की रचना भी करते थे। आप के द्वारा रचित वाणी में ख्याल, कबित, छंत, गायन, वादन और कविता की शैलियों का प्रयोग किया गया है। ऐसा ही एक प्रमाण 'ख्याल पातशाही दसवी' के शीर्षक से 'मित्र प्यारे नु हाल मुरीदां दा कहना[10]'से मिलता है। आप ने गुरबानी गायन में 'तानपुरा' वाद्य का प्रयोग भी किया। आप का पसंदीदा अवनद्ध वाद्य पखावज था। आप ने युद्ध में सिख योद्धाओं में उर्जा और वीर रस के संचार के लिए 'ढाढ़ी गायन शैली' को भी प्रोत्साहित किया।

निष्कर्ष

मध्यकाल की भक्ति लहर में अनेकों संत-भक्तों ने संगीत की सरल और माधुर्यपूर्ण विशिष्टता और विलक्षणता को समझते हुए इसे भक्ति की उचाईयों को अनुभव कर पाने का माध्यम बताया है| संगीत न सिर्फ मनोरंजन का साधन है परन्तु यह एक ऐसा साधन है जो मनुष्य की किसी भी अवस्था को चौगुना कर सकता है| यदि कोई इसे अपने आराध्य की आराधना के लिए उपयुक्त करे तो संगीत उसे आराध्य के समीप पहुचाने वाला वाहक बन जाता है, यही कारण रहा कि लगभग सभी संत भक्तों ने अधियातम के सन्देश को लोगों तक पहुँचाने के लिए संगीत कला का प्रयोग किया जिसका उदाहरण संत भक्तों के साहित्य में स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है, परन्तु उन्होंने यह भी आगाह किया है कि यदि कोई संगीत को अपनी वृत्तियों को संतुष्ट करने हेतु प्रयोग में लाये तो संगीत नशा बनकर उसे नाश की ओर भी ले जाने में सक्षम है|

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संदर्भ

1. मितल, प्रभु दयाल, ब्रज के धार्मिक समप्रदाओं का इतिहास, नैशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 2002, प्रष्ठ-2
2. आदि ग्रन्थ, अंग-266
3. गर्ग मुकेश, निबंध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, 1978, प्रष्ठ-543
4. जोशी उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, कल्पना प्रकाशन नई दिल्ली, 2018, प्रष्ठ-254
5. आदि ग्रन्थ, अंग-816
6. गर्ग, मुकेश, निबंध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, 1978, प्रष्ठ 546
7. खन्ना, जतिन्द्र सिंह, मध्यकालीन धर्मों में शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन, नैशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 2001, प्रष्ठ-57
8. आदि ग्रन्थ, अंग-958
9. आदि ग्रन्थ, अंग-885
10. दशम ग्रन्थ, अंग-1347